गुप्तकालीन आर्थिक जीवन का अवलोकन

रंजन यादव (NET JRF)
शोधार्थिनी
प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग
श्री महंथ रामाश्रय दास पी0जी0 कालेज,
भुड़कुड़ा, गाजीपुर

विश्व की सभी प्राचीन संस्कृतियों में अर्थ की विशेष भूमिका रही है। भारतीय मनीषियों ने भी अर्थ को विशेष महत्व दिया। भारतीय मनीषियों ने पुरूषार्थो में जैसे-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की धारणा में धर्म के बाद तुरन्त अर्थ को महत्ता प्रदान किया है। इनका मानना था, अर्थ के आधार पर ही अन्य पुरुषार्थ या मानव के अन्य क्रियाकलाप आधारित होते हैं। बिना अर्थ के राज्य और समाज की कल्पना असंभव सी प्रतीत होती है।

गुप्त कालीन अर्थ व्यवस्था चूकि कुषाण काल के पश्चात एक लम्बे समय के बाद स्थापित हुई। गुप्तकालीन अर्थ व्यवस्था भी एक सुसम्पन्न अर्थ व्यवस्था थी। प्रारम्भ में उत्तर भारत में कुषाण काल के बाद एक अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी जिसको पुनः स्थापित करने में गुप्त शासको ने विशेष योगदान दिया। गुप्तयुगीन भूमि एवं राजस्व व्यवस्था के विषय में जानकारी उस समय के अभिलेखों एवं साहित्य से प्राप्त होते है और इन्हीं से व्यापार, वाणिज्य एवं व्यापारिक सम्बन्धों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। गुप्तकाल में मुद्रा विनिमय का एक प्रमुख साधन बन गया था। इसका प्रयोग इस काल के व्यापारी भी प्रमुखता से कर रहे थे। गुप्तकाल को शास्त्रीय भारत का स्वर्ण युग माना जाता है। चन्द्रगुप्त प्रथम स्वर्ण सिक्कों की एक उल्लेखनीय श्रृंखला के साथ गुप्त मुद्रा निर्माण की शुरुआत की थी। गुप्त सम्राटों या राजाओं के स्वर्ण सिक्के सुप्रसिद्ध थे।

गुप्त राजाओं का शासनकाल आर्थिक दृष्टि से समृद्धि एव सम्पन्नता का काल माना जा सकता है। कृषि की उन्नति पर विशेष ध्यान दिया गया। अमर कोष में लोहे से बनें हल के फाल का उल्लेख किया गया है जिससे सूचित होता है कि यह महत्वपूर्ण कृषि उपकरण सर्व सुलभ था और इसका उपयोग भूमि जोतने के लिये किया जाता था। कालीदास ने कृषि व पशुपालन को राष्ट्रीय सम्पत्ति का एक बडा साद्यन निरूपित किया है। धान, गेंहू, गन्ना, जूट, तिलहन, कपास, ज्वार, बाजरा, मसाले, धूप, नील, इत्यादि अत्यधिक मात्रा में उत्पन्न होते थे। सिचाई की समुचित व्यवस्था थी, उद्योग धन्धे अपनी उन्नति पर थे, कपडे का निर्माण करना इस काल का सर्वप्रमुख उद्योग था, जिससे बहुसंख्यक लोगों की जीविका चलती थी। इसके अतिरिक्त हाथी दॉत की वस्तुएँ बनायी जाती थी, मूर्तिकारी, चित्रकारी, शिल्पकारी, मिट्टी के बर्तन बनाना, जहाजों का निर्माण आदि इस समय के कुछ अन्य उद्योग धन्धे थे। व्यवसाय एव उद्योग का संचालन श्रेणिया करती थी। वस्तुतः श्रेणी एक ही प्रकार के व्यवसाय अथवा शिल्प का अनुसरण करने वाले लोगों की समिति होती थी। मन्दसोर के अभिलेख में पट्टवाय श्रेणी अर्थात रेशमी सूत बनाने वाले की समिति व इन्दौर लेख में तैलिक श्रेणी का उल्लेख मिलता हैं। श्रेणियाँ बैंको का भी कार्य करती थी और इस रूप में अपने सदस्यों को सूद पर धन भी देती थी। प्रत्येक श्रेणी का एक प्रधान और चार या पाँच व्यक्तियों की एक कार्यकारिणी होती थी।

बृहस्पति स्मृति से ज्ञात होता है कि ईमानदार, वेदों के ज्ञाता, आत्म संयमी, कर्तव्य परायण और कुलीन व्यक्ति ही श्रेणियों के प्रबन्ध अधिकारी नियुक्त किये जाते थे। श्रेणियां स्वायत्तशासी संस्थायें थी जिनके अपने नियम और कानून होते थे। राज्य सामान्य तौर से उनका सम्मान करता था। स्मृतियों में राजा को निर्देशित किया गया है कि वह श्रेणियों में रीति-रिवाजों का पालन करवायें, यद्यपि श्रेणियाँ अपने सदस्यों के झगड़ों का निपटारा स्वयं करती थी। प्रत्येक श्रेणी के पास अपनी अलग मोहर होती थी, वैशाली

से एक सयुक्त श्रेणी की २७४ मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं।

व्यापार व्यवसाय में नियमित सिक्कों का प्रचलन होता था। वस्तुतः गुप्त राजाओं ने सोने, चांदी और तांबे के बहुसंख्यक सिक्के चलवाये। तत्कालीन समय में सोने व चाँदी के सिक्कों का अनुपात १:१६ के रूप में होता था जबकि सामान्य लेन-देन कौडियों में होता था। वाणिज्यिक रूप से गुप्त युग में व्यापारिक प्रगति तो हुई और साथ ही लम्बी व चौड़ी सड़कों द्वारा प्रमुख नगर को जोड़ा गया था। भडौच, उज्जयिनी, प्रतिष्ठानपुर, विदिशा, प्रयाग, पाटलीपुत्र, वैशाली, ताम्रलिपि, मथुरा, अहिछत्र, कौशाम्बी आदि प्रमुख व्यापारिक नगर थे। माल ढोने के लिये जानवरों का प्रयोग किया जाता था। गगा, ब्रहम्पुत्र, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा एवं कावेरी नदियों द्वारा भी व्यापार होता था। सम्भवतः भारतीयों ने मालवाहक जहाजों का निर्माण किया था। कुछ जहाजों में एक साथ ५०० तक व्यक्ति बैठ सकते थे तो दूसरी तरफ उन्हीं जहाजों के माध्यम से विविध प्रकार के कपडे, मसाले, खाद्यान्न, नमक, बहुमूल्य पत्थर आदि सामग्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जायी जाती थी।

इस समय बंगाल में ताम्रलिप्ति प्रमुख बन्दरगाह था, जहाँ से चीन, लंका, जावा, सुगात्रा आदि देशों के साथ व्यापार होता था। पश्चिमी भारत का प्रमुख बंदरगाह भृगुकच्छ अर्थात भडौच था जहाँ से पश्चिमी देशों के साथ समुद्री व्यापार होता था। स्थल मार्ग द्वारा यूरोप के साथ भारत का व्यापार होता था, दक्षिणी पूर्वी एशिया एवं पश्चिमी एशिया के विभिन्न देशों के साथ भी भारत का व्यापार उन्नति पर था। कपडे, बहुमूल्य पत्थर, हाथी दाँत के वस्तुएँ, गरम मसाले, नारियल, सुगन्धित दव्य, नील, आदि निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ व्यापारी एक स्थान से दूसरे स्थान को माल लेकर जाते समय समूह में चलते थे। इसे सार्थ और इसके नेता/प्रमुख को सार्थवाह कहा जाता था।

व्यापारियों की समिति भी होती थी जिसे निगम कहा जाता था। निगम का प्रधान श्रेष्ठी कहलाता था। एस०के० मैत्री का विचार है कि गुप्तकाल में भारत तथा पाश्चात्य विश्व के बीच व्यापारिक सम्बन्धों में गिरावट आ गयी थी। इसका प्रमाण हमे कुमारगुप्त कालीन मन्दसौर लेख से मिलता है जिससे ज्ञात होता है कि पट्टवाय श्रेणी लाट प्रदेश को छोड़कर दसपुर में जाकर बरा गयी थी। इस प्रयोजन का मुख्य कारण यही प्रतीत होता है कि इस समय पश्चिमी देशो के साथ व्यापार लाभकारी नहीं रह गया था। आर०एस० शर्मा भी आर्थिक दृष्टिकोण से गुप्तकाल को पतन का काल मानते है किन्तु यह विचार सही नहीं है। मन्दसौर लेख से यह सूचित नहीं होता है कि बुनकरों की श्रेणी ने अपना परम्परागत पेशा छोडकर अन्य पेशों को अपना लिया था। इसी लेख में एक स्थान पर कहा गया है कि उन्होंने शिल्प द्वारा अर्जित धन से सूर्य के भव्य मन्दिर का निर्माण किया था और बाद में क्षतिग्रस्त होने पर उसका जीर्णोद्धार करवाया था। यदि बुनकर आपत्तिग्रस्त होते तो अपनी गाढी कमाई का उपयोग मन्दिर निर्माण में कदापि नहीं करते। बुनकरों का प्रयोजन सुरक्षा सम्बन्धी कार्य हो सकता है। इस सम्बन्ध में एक अन्य विचारणीय बात यह है कि रोम के साथ स्थल मार्ग से व्यापार भी होता था और यह चौथी सदी में इतना अधिक विकसित हुआ कि सिल्क जो आर्लियन के काल अर्थात १६१-१८० ई० में सोने से तौलकर मिलता था और धनी एव कुलीन वर्गों के विलासिता की वस्तु थी। वह जुलियन के काल अर्थात ३६१ से ३६३ई० में इतना सस्ता हो गया कि सामान्य मनुष्य भी उसे खरीद सकता था। अतः यह सही नही कहा जा सकता कि गुप्त युग में भारत का रोम के साथ व्यापार बन्द एवं पतनोन्मुख स्थिति में रहा।

यद्यपि रोम के इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि ४०८ ई० में हूण आकांता एलरिक ने रोम का घेरा डाला और फिरौती के रूप में ३००० पौण्ड, गोल मिर्च व ४००० थान रेशमी वस्त्र प्राप्त करने के बाद ही अपना घेरा उठाया था। यह इस बात की सूचक है कि पाँचवी सदी में रोम में भारतीय माल प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। फलतः रोम के पतन के बाद उसका स्थान कास्टैन्टीनपोल/वाइर्जेन्टाइम ने ग्रहण किया। ये लोग अत्यंत धनी एवं विलास प्रिय लोग थे जिनकी

आवश्यकतायें केवल पूर्वी देश ही पूरी कर सकता था। वाइजैन्टाइन के चिकित्सा प्रबन्धों से पता चलता है कि यहाँ के बाजारों में सभी प्रकार के मसाले बहुतायत मात्रा में उपलब्ध थे। भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त वाइजैन्टाइन सिक्कों से दोनों देशों के बीच घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्धों की सूचना मिलती है। अतः हमारे पास यह सिद्ध करने के लिये कोई भी ठोस प्रमाण नही है कि गुप्त युगीन व्यापार, वाणिज्य का ह्रास हुआ है। रोमिला थापर के शब्दों में गुप्त काल व्यापारिक समृद्धि उस आर्थिक प्रगति का अंतिम चरण थी जो पिछली काल में प्रारम्भ हुई थी।

गुप्तकालीन अर्थ व्यवस्था कृषि, व्यापार और विनिर्माण का एक जीवत मिश्रण थी, जिसे एक सुसरचित संघ प्रणाली और एक समृद्ध आंतरिक एव वाह्य व्यापार नेटवर्क का समर्थन प्राप्त था। कृषकों पर बढते बोझ और लम्बी दूरी के व्यापार में अन्ततः गिरावट के बावजूद गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय आर्थिक समृद्धि देखी गयी जो फलते-फूलते उद्योगों, स्वर्ण सिक्कों के व्यापक प्रयोग और आर्थिक जीवन में सघों की सक्रिय भागीदारी में परिलक्षित होती है। इस आर्थिक परिवर्तन ने गुप्तोत्तर भारत के सामाजिक, राजनीतिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

***

मेरे पापा

साक्षी सिंह
एम.ए. प्रथम वर्ष

आप से मेरी हिम्मत आप ही से आस है,
आप है पापा तभी तो चमत्कार पर विश्वास है।।
आप के होने का मतलब आकाश का मुट्ठी में होना,
आप से दूरियां मतलब खुद को खुद से खोना।
आप परेशानियों से लड़ने को दो धारी तलवार हो।।
हर दिन मेरा साया बनकर, साथ निभाते हो,
आप ही तो पापा मुझको, जीवन की राह दिखाते हो।।
हम से प्यार तो बहुत करते हो, पर बताते नहीं,
इतनी मेहनत करते हो हमारे लिए, पर जताते नहीं।।
आप मेरे अप्रदर्शित और अनंत प्यार हो पापा,
आप ही तो मेरे जीवन का आधार हो पापा।।
पापा आप ज़मीर हैं और आप ही जागीर हैं
आप को पाकर हम दुनियां में सबसे अमीर हैं।।
सब कहते हैं सब कुछ खुदा देते हैं,
लेकिन जो खुदा भी ना दे सके, वो पिता देते हैं।।
और क्या लिखूं आप के बारे में, मेरे पास शब्दों की कमी है,
आज आप को पढ़ते-पढ़ते पापा, मेरी आंखों में नमी है।

प्रकृति का उपहार

साक्षी सिंह
एम.ए. प्रथम वर्ष

मानों प्रकृति का उपकार,
इसी से है सारा संसार,
मृदा नीर और बयार,
सारे जीवन के आधार ।।
सौरभ मधु बरसाने को,
प्रकृति ने पुष्प निर्माण किया,
जीवों संग पर्यावरण बचाने को,
जल रूपी जीवनदान दिया।।
मानव हित के खातिर,
प्रकृति ने रूप निखारा है,
वायु जो हर प्राणी की आयु,
उसको जीवन में उतारा है।।
मदमाते झोंके, शीतल हवाएँ,
प्रकृति की गोद में जीवन मुस्काए।।
जीवन दर्शन के पहलू को,
प्रकृति खूब सिखाती है,
इसीलिए तो सारी दुनिया,
इसको शीश नवाती है।।

***